गिजुभाई का गुलदस्ता-2
चबर-चबर
गिजुभाई बधेका
अनुवाद, रूपांतरण और चित्रांकन : आबिद सुरती

ISBN 978-81-237-4841-2
पहला संस्करण : 2007
बारहवीं आवृत्ति : 2019 (*शक* 1941)

Chabar-Chabar *(Hindi)*

₹ 65.00

निदेशक, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110 070 द्वारा प्रकाशित
www.nbtindia.gov.in

नेहरू बाल पुस्तकालय

गिजुभाई का गुलदस्ता-2

चबर-चबर

गिजुभाई बधेका

अनुवाद, रूपांतरण और चित्रांकन
आबिद सुरती

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
NATIONAL BOOK TRUST, INDIA

भोला भाला

शेर के भांजे

चबर-चबर

सौ चूहे मार के

भेड़की आंटी

पक-पक पकौड़ा

राज की बात

लाल बुझक्कड़

पोंगा पंडित

रानी बन गई दासी

तोता-मैना

भोला भाला

एक था घड़ियाल। झूठा और मक्कार। जिस नदी में वह रहता था उसका पानी सूखने लगा। 'अब यहां रहने में जान का खतरा है।' उसने सोचा, 'झील में जाना पड़ेगा।' झील थी काफी दूर। फिर भी साहस कर वह शाम को चल दिया। रात भर चलता रहा। भोर होते-होते वह थक कर चूर हो गया। झील अभी भी थोड़ी दूर थी।

घड़ियाल में अब एक डग भी भरने की शक्ति नहीं थी। तभी उसने एक चरवाहे को अपनी भैंसों के साथ गुजरते हुए देखा। वह खुश हो कर उससे प्रार्थना करने लगा, 'चरवाहे चाचा...चरवाहे चाचा, मुझे अपनी गोद में उठा लो न। मुझे केवल झील तक जाना है और मैं बहुत थक गया हूं।'

चरवाहा दूर से ही बोला, 'ना, बाबा ना। मैं तुझे उठाऊंगा तो तू मुझे ही इस संसार से उठा देगा।'

घड़ियाल ने अपने गले पर हाथ रख कर कहा, 'कसम से। आप मुझ पर दया करेंगे तो मैं आपको दुआएं दूंगा। आपको पुण्य मिलेगा सो अलग।' चरवाहा था भोला भाला। उसने धूर्त घड़ियाल की बात पर भरोसा कर लिया। उसने तुरंत घड़ियाल को उठा कर कंधे पर डाला और चल दिया। घंटा-भर धूप में चल कर उसने घड़ियाल को झील के किनारे उतारना चाहा। घड़ियाल हाथ जोड़ कर बोला, 'चरवाहे चाचा...चारवाहे चाचा, जब इतनी दया की है तो थोड़ी और कर दो। मुझे किनारे पर नहीं, पानी में छोड़ दो।' चरवाहे ने कहा, 'ठीक है' और दो कदम बढ़ा कर उसे पानी में छोड़ने लगा तो घड़ियाल फिर रिरियाया, 'चरवाहे चाचा...चरवाहे चाचा, यहां तो बहुत कम पानी है। दो कदम और

बढ़ा कर मुझे गहरे पानी में छोड़ दो ना!' चरवाहे ने कहा, 'ठीक है' और झील में वह दो कदम और आगे बढ़ा। पानी उसकी कमर तक आ गया। अब और आगे जाना संभव नहीं था। उसने जैसे ही कंधे पर से घड़ियाल को उतार कर पानी में छोड़ा कि घड़ियाल ने उसका पैर पकड़ लिया। चरवाहा चौंक कर बोला, 'यह क्या?' घड़ियाल ने कहा, 'शिकार खुद चल कर मुंह में आए तो उसे कोई बेवकूफ भी नहीं छोड़ेगा। चाचा, मैं तो आपको खाऊंगा।'

'लेकिन तूने तो कसम ली है।' चरवाहा बोल उठा, 'मैं तुझे चिलचिलाती धूप में उठा कर दो मील चला हूं। मैंने तेरी भलाई चाही और तू ही मुझे खाएगा?' घड़ियाल ने कहा, 'मुझे भूख लगी है। आपको नहीं खाऊंगा तो मैं खुद ही भूख से बिलबिला कर मर जाऊंगा।' चरवाहा चिल्लाया, 'यह सरासर अन्याय है।'

तभी झील में पानी पीने के लिए गधा आ गया। उसे देख कर घड़ियाल ने कहा, 'तब करवा लो न गर्दभजी से न्याय।' तुरंत चरवाहे ने गधे से कहा, 'आप श्रीमान सूरत से ही पंडित लगते हैं। क्या हमारा इनसाफ करेंगे?' गधा बोला, 'क्यों नहीं! बोलो क्या बात है?' चरवाहे ने उसे विस्तार से बताया।

गधे ने ठहाका लगाया, 'चरवाहे चाचा, कलियुग में ऐसा ही होता है। अब मेरी ही मिसाल लो। जब तक मालिक का बोझ ढोता रहा, मुझे दो वक्त का खाना मिलता रहा। बुढ़ापा आया नहीं कि दो डंडे मार कर खदेड़ दिया। चाचा, मुझे बदला मिला वफादारी का और आपको बदला मिला भलाई का।' यह कह कर गधा चलता
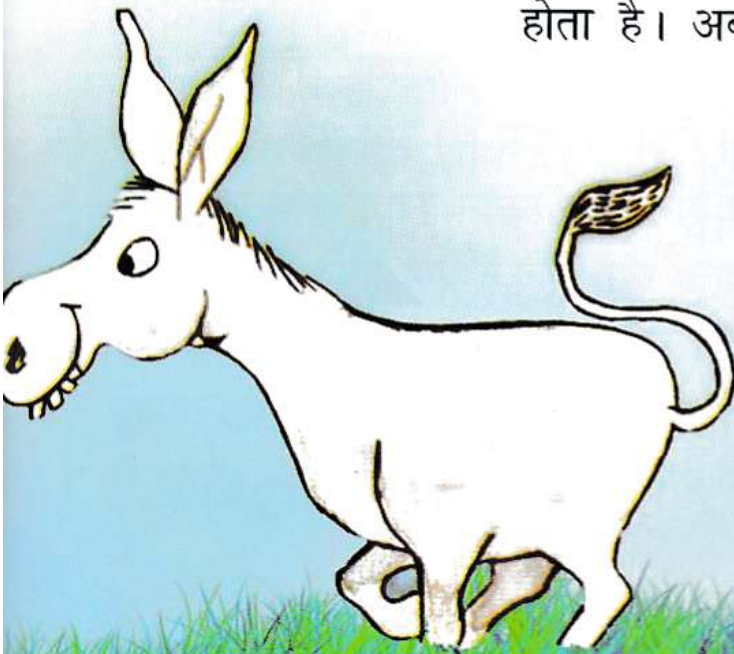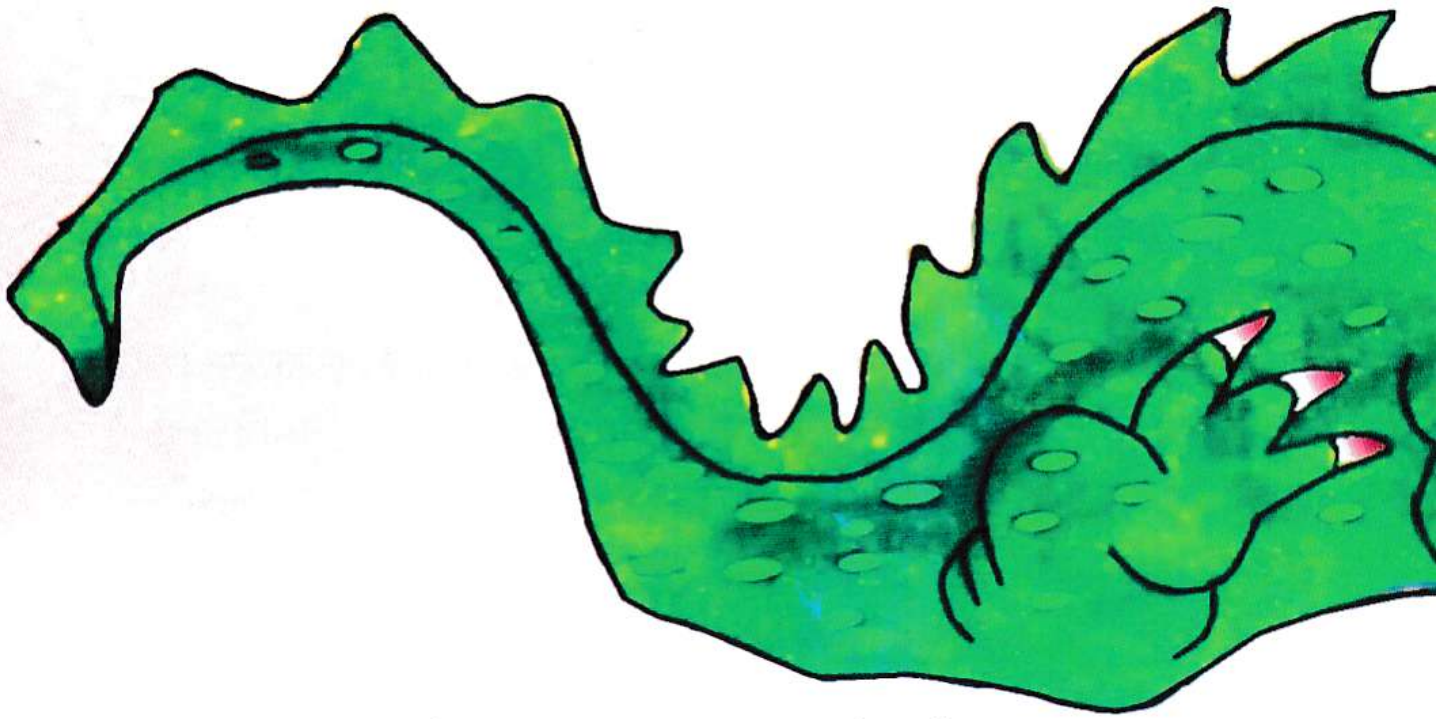
बना तो घड़ियाल ने मुस्कुरा कर पूछा, 'अब तो संतोष हुआ न चाचा?'

चरवाहे ने कहा, 'वह गधा बेचारा दुखी प्राणी था। अपना दुखड़ा रो गया। हम किसी और से पूछेंगे।' तभी झील पर पानी पीने के लिए आता एक लंगड़ा बैल दिखाई दिया। जैसे ही वह करीब आया, चरवाहे ने पूछा, 'बैल मियां...बैल मियां, गाय हमारी माता समान तो आप हमारे पिता समान हैं। क्या आप हमारा इनसाफ करेंगे?' बैल बोला, 'बेशक, लेकिन बात क्या है?' चरवाहे ने उसे पूरा किस्सा विस्तार से सुनाया। बैल ठहाका लगा कर हंस दिया। फिर बोला, 'चाचा, कलयुग में ऐसा ही होता है। अब मेरी ही मिसाल लो, जिंदगी-भर अपने कांधे पर जुआ डाल कर किसान का खेत जोतता रहा। खाने को रूखा-सूखा जो वह देता खाता रहा, लेकिन एक गड्ढे में गिर जाने से मेरी टांग टूट गई तो उसने मुझे डंडे से मार कर खदेड़ दिया। इस युग में नेकी के बदले स्वर्ग नहीं, नरक मिलता है और यह घड़ियाल शायद आपको वहीं पहुंचाना चाहता है।' यह कह कर बैल चलता बना तो घड़ियाल ने
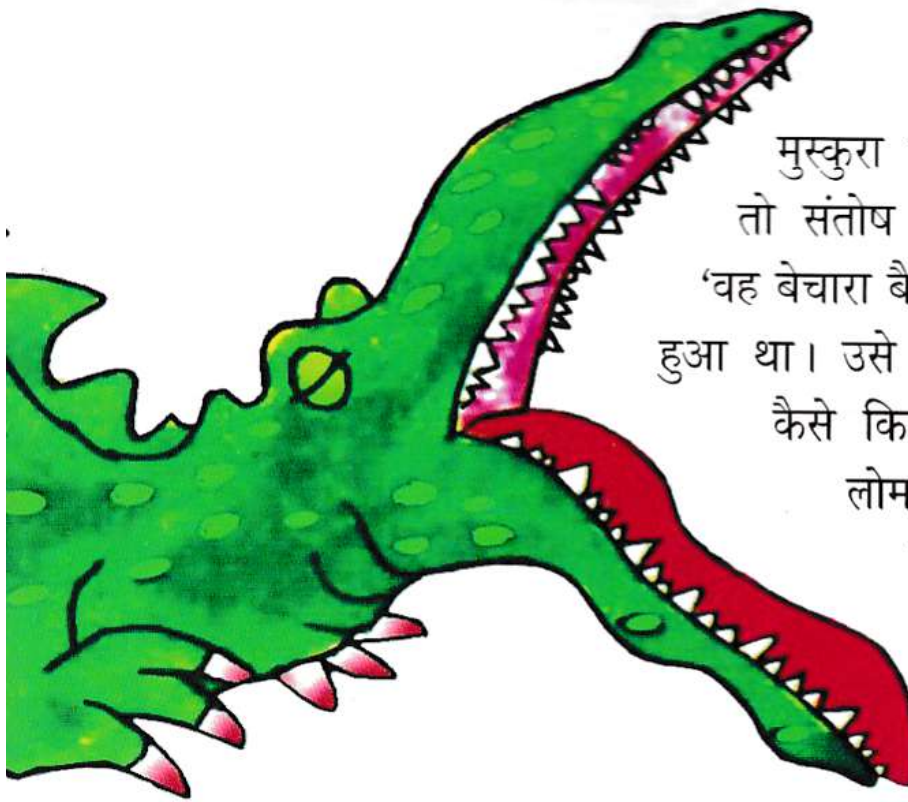
मुस्कुरा कर कहा, 'चाचा, अब तो संतोष हुआ?' चरवाहा बोला, 'वह बेचारा बैल तो जमाने का सताया हुआ था। उसे क्या पता कि इनसाफ कैसे किया जाता है? हम उस लोमड़ी से पूछेंगे।' उसने दूर से आती हुई लोमड़ी की ओर संकेत किया। घड़ियाल ने चेतावनी दी, 'आखिरी मौका दे रहा हूं। मेरे पेट में कब से चूहे कूद रहे हैं।'

जैसे ही लोमड़ी करीब आई, चरवाहे ने उसे पूरा किस्सा विस्तार से सुनाया। फिर प्रार्थना की, 'मैडम लोमड़ी, आपका इनसाफ तो अदले-जहांगीर से भी बेहतर होता है। अब आप ही बताएं, क्या सच का फल कड़वा हो सकता है? क्या नेकी का बदला बुराई हो सकता है?' लोमड़ी दृढ़ता से बोली, 'हरगिज नहीं।' और अपनी बिरादरी वालों को आवाज दी— हुआं-हुआं-हुआं। पलक झपकते ही जंगल की सारी लोमड़ियां झील पर इकट्ठा हो गईं। फिर उन सबने मिल कर झील का सारा पानी पी डाला। झील खाली हो गई। घड़ियाल की सिट्टीपिट्टी गुम हो गई। चरवाहे का पांव छूट गया। वह लोमड़ी का आभार मान कर फौरन वहां से नौ-दो-ग्यारह हो गया। घड़ियाल संभला और तिलमिला कर लोमड़ी से बोला, 'नहीं छोड़ूंगा, तुझे नहीं छोड़ूंगा। तुझे करौंदे खाते हुए पकड़ूंगा जरूर।' लोमड़ी बोली, 'हुआं-हुआं-हुआं' और अंगूठा दिखा कर चली गई।

दूसरे रोज घड़ियाल करीब के नाले में घुस कर लेट गया। जब लोमड़ी पानी पीने के लिए वहां गई तो उसने छिपे हुए घड़ियाल को देख लिया। वह खुद से बोली, 'नानी कहती थी आज नाले का पानी साफ नहीं होगा, झरने का ताजा पानी पीना।' यह कहती हुई लोमड़ी मुंह मोड़ कर वहां से सटक गई। घड़ियाल ने सिर पीट लिया। लेकिन वह निराश नहीं हुआ। दूसरे रोज वह झरने में जा छिपा। थोड़ी देर बाद वही लोमड़ी पानी पीने के लिए आई। वह थी सावधान, इसलिए इस बार भी उसने घड़ियाल को देख लिया। वह खुद से बोली, 'नानी कहती थी, आज झरने का पानी गंदा होगा, नदी का बहता पानी पीना।' यह कह कर लोमड़ी चल पड़ी। घड़ियाल ने फिर सिर पीटा, 'बहुत सयानी बनती है, लेकिन कब तक?' मन-ही-मन भुनभुनाते हुए वह करौंदे के पेड़ पर जा चढ़ा और छिप कर बैठ गया। लोमड़ी जैसे ही करौंदे खाने के लिए पेड़ पर चढ़ी, तैसे ही घड़ियाल ने उसका पांव पकड़ लिया। लोमड़ी का दिल दहल गया, मगर दम-भर के लिए। उसने तुरंत कुछ सोच कर झूठ-मूठ कहा, 'यह घड़ियाल भी कैसा उल्लू है? पेड़ की शाख पकड़ कर ऐसे खुश हो रहा है जैसे मेरी टांग पकड़ी हो।' अपनी बेवकूफी पर पछताते हुए घड़ियाल ने तुरंत टांग छोड़ दी। उसी क्षण लोमड़ी ऐसी भागी कि आज तक घड़ियाल के हाथ नहीं लगी।
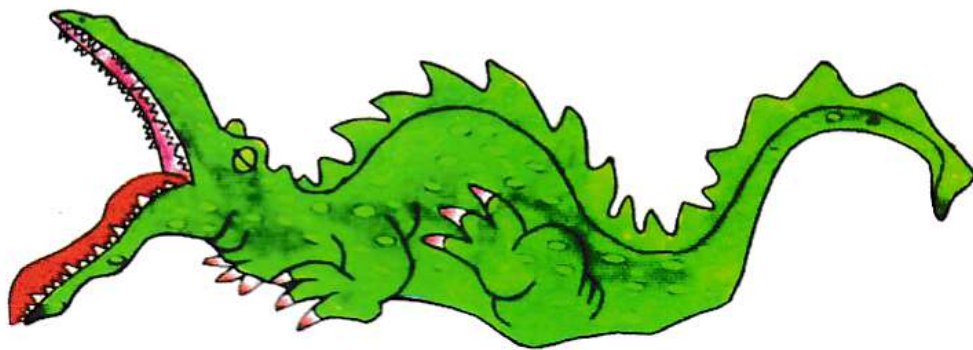
शेर के भांजे

एक थी बुढ़िया। एक रोज वह वन में लकड़ियां लेने गई। वहां खरबूजे की कई बेलें फैली हुई थीं। उसमें एक खरबूजा ऐसा था जो पक कर महक फैला रहा था। बुढ़िया के मुंह में पानी आ गया। उसने खरबूजा तोड़ा और घर ले आई। नहा-धो कर वह खाने बैठी ही थी कि खरबूजा बोला, 'माताजी, मुझे

नहीं खाना। मैं तो आपका लल्ला हूं।' बुढ़िया सोच में पड़ गई। तभी खरबूजे में से एक बालक निकला। बुढ़िया ने उसका नाम राजा रख दिया। दो रोज बाद बुढ़िया फिर वन में गई और एक दूसरा खरबूजा ले आई। नहा-धो कर वह खाने बैठी ही थी कि खरबूजा बोला, 'माताजी, मुझे नहीं खाना। मैं तो आपका लल्ला हूं।' बुढ़िया सोच में पड़ गई। तभी खरबूजे में से एक बालक निकला। बुढ़िया ने उसका नाम रणवीर रख दिया। थोड़े दिनों बाद बुढ़िया फिर वन में गई। फिर एक बार वह बढ़िया खरबूजा तोड़ लाई। नहा-धो कर वह जैसे ही खाने बैठी कि खरबूजा बोला, 'माताजी मुझे नहीं खाना। मैं तो आपका लल्ला हूं।' बुढ़िया सोच में पड़ गई। तभी खरबूजे से एक बालक निकला। बुढ़िया ने उसका नाम गामा रख दिया। महीने भर बाद फिर बुढ़िया का वन में जाना हुआ। वहां से वह एक महकता हुआ खरबूजा खोज लाई। नहा-धो कर वह जैसे ही खाने बैठी कि खरबूजे से आवाज उठी, 'माताजी, मुझे मत खाना। मैं तो आपका लल्ला हूं।' बुढ़िया सोच में पड़ गई। तभी खरबूजे में से एक सुंदर बालक निकला। बुढ़िया ने उसका नाम शूरवीर रख दिया। अब खरबूजे का मौसम खत्म होने वाला था। बुढ़िया ने सोचा, एक बार और कोशिश कर लूं। शायद कोई मीठा खरबूजा मिल जाए। वह वन में गई और एक छोटा-सा खरबूजा उठा लाई। नहा-धो कर वह खाने बैठी ही थी कि खरबूजा बोला, 'माताजी, मुझे मत खाना। मैं तो आपका लल्ला हूं।' बुढ़िया सोच में पड़ गई। तभी खरबूजे में से एक नन्हा-सा बालक निकला। बुढ़िया ने उसका नाम छुटका रख दिया। ये पांचों बेटे दिन दुगुने-रात चौगुने बढ़ने लगे। देखते-देखते वे लंबे-तगड़े जवान बन गए। एक रोज बुढ़िया वन में फूल चुनने गई। वहां उसे एक शेर मिला। वह बोला, 'बुढ़िया, हम हैं जंगल के राजा। हम तुम्हें खा जाएंगे।' बुढ़िया ने कहा, 'महाराज, आप मुझे कैसे खा सकते हैं? आप

तो मेरे भाई लगते हैं। अगर आप मुझे खा जाएंगे तो आपके भानजे अनाथ नहीं हो जाएंगे?' धूर्त शेर ने मन-ही-मन सोचा, 'इस दुबली-पतली बुढ़िया को खाने से बेहतर यही होगा कि मैं भानजों सहित इसको खाऊं।' उसने कहा, 'हम कैसे मान लें कि हमारे भानजे भी हैं? इसलिए हम अपनी तसल्ली के लिए कल शाम को तुम्हारे घर तशरीफ लाएंगे। सारे भानजों को खिला-पिला कर तैयार रखना।' बुढ़िया बोली, 'जी महाराज।'

घर आ कर उसने अपने बेटों को सारी बात बताई और सावधान कर दिया। दूसरे रोज शाम के वक्त शेर आया। भानजों ने मिल कर मामा का स्वागत किया। फिर उन्होंने मामा से कहा, 'मामा, मामा, हमें एक गीत सुनाओ।' शेर गला खंखार कर शुरू हो गया :

पहले खाऊंगा राजा रणवीर
फिर खाऊंगा गामा शूरवीर
फिर खाऊंगा छोटे मियां को
फिर खाऊंगा बुढ़िया माई को

फिर शेर ने भानजों से कहा, 'अब गीत सुनाने की बारी तुम्हारी है।' भानजे तुरंत शुरू हो गए :

हाथ थामेंगे राजा रणवीर
पैर पकड़ेंगे गामा शूरवीर
सिर काटेंगे छोटे मियां
कब्र खोदेगी बुढ़िया माई।

यह सुन कर शेर की हवा निकल गई। दुम दबा कर वह ऐसा भागा कि इस ओर पलट कर भी नहीं देखा।

चबर-चबर

एक थी चिड़िया और एक था कौआ। चिड़िया का घर मोम का था और कौए का गोबर का। बारिश का मौसम आया। मूसलाधार पानी बरसने लगा। छतों पर टपाटप आवाज करने लगा। पेड़ों पर से टपाटप टपकने लगा। नालों में कलकल, नदी में छलछल बहने लगा। जिधर देखो उधर पानी ही पानी। चिड़िया का घर मोम का था। वह तो दरवाजा बंद कर भीतर लेट गई। लेकिन कौए का घर गोबर का था। गोबर पानी में घुल गया। घर ढह गया। बेचारा कौआ उड़ कर एक पेड़ की डाल पर जा बैठा। ठीक उसके सामने वाली डाल पर चिड़िया का घर था। कौए की नजर उस पर ठहरी। उसने सोचा, 'आज की रात चिड़िया के घर गुजारूं।'

कौआ चिड़िया के दरवाजे की कुंडी खटखटाने लगा, 'चीची बहन, चीची बहन, दरवाजा खोलो।' चिड़िया बोली, 'जरा ठहरो, मैं अपने बच्चे को नहला रही हूं।' कुछ देर इंतजार कर कौए ने फिर कुंडी खटखटाई, 'चीची बहन, चीची बहन, दरवाजा खोलो।' चिड़िया बोली, 'थोड़ी देर सब्र करो। मैं अपने बच्चे को खाना खिला रही हूं।' कौआ थोड़ी

देर उबासियां लेता रहा। फिर कुंडी खटखटाई, 'चीची बहन, चीची बहन, दरवाजा खोलो।' चिड़िया बोली, 'कहा न, धीरज धरो! मैं बच्चे को सुला रही हूं।' कौआ चुप हो गया। लेकिन ज्यादा देर तक मौन न रहा सका। उसने फिर से कुंडी खटखटाई, 'चीची बहन, चीची बहन, दरवाजा खोलो।' आखिर चिड़िया ने तंग आ कर दरवाजा खोला। कौआ तो मारे ठंड के थर-थर कांप रहा था। चिड़िया ने पूछा, 'कहां बैठोगे? चावल की गगरी में या गेहूं की मटकी में?' कौआ बोला, 'दाल की हंडिया में।' रात को जब सब सो गए, तब कौए काका दाल खाने लगे—चबर-चबर। आवाज सुन कर चिड़िया की नींद खुल गई। बोली, 'यह चबर-चबर कौन कर रहा है?' वह चारों ओर देखने लगी। तभी आवाज बंद हो गई। चिड़िया सो गई। थोड़ी देर बाद आवाज फिर शुरू हो गई—चबर- चबर। चिड़िया फिर से जाग गई। उसने चारों ओर देखा। तभी आवाज बंद हो गई। ऐसे ही रात-भर आवाजें उठती रहीं। बार-बार चिड़िया जाग कर सोचती—यह चबर-चबर कौन करता होगा?' और तभी आवाज बंद हो जाती। सुबह हुई। कौए काका कांव-कांव करते हुए उड़ गए। चिड़िया ने जा कर हंडिया देखी। उसमें दाल का एक भी दाना नहीं बचा था।

सौ चूहे मार के

एक थी बिल्ली। वह रोजाना एक मुल्ला के घर में घुसती और मटकी में रखा घी चाट जाती। मुल्लाजी अपनी लंबी दाढ़ी खुजला कर सोचते रसोईघर में घुस कर रोजाना घी कौन चुराता होगा? एक दिन वह चोर को पकड़ने के लिए किवाड़ के पीछे छिप कर खड़े हो गए। तभी बिल्ली खिड़की के रास्ते आ कर मटकी में से घी चाटने लगी। तुरंत मुल्लाजी ने डंडा उठाया और उसे मारने दौड़े। बिल्ली का सिर मटकी में था। वह घबरा कर भागी, लेकिन मटकी में से अपना सिर नहीं निकाल सकी। बिल्ली दौड़ती हुई एक खंभे से जा टकराई। मटकी फूट गई, लेकिन उसका कंठा बिल्ली के गले में ही रह गया।

बिल्ली गले में कंठा लिए आगे बढ़ी। रास्ते में उसे एक कबूतर मिला। कबूतर ने पूछा, 'बिल्ली मौसी... बिल्ली मौसी, कहां चली?' बिल्ली बोली, 'तीरथ करने।' कबूतर ने पूछा, 'गले में यह क्या पहना है?' बिल्ली ने जवाब दिया, 'यह तो कंठी का बाप कंठा है। मुझे मेरे गुरुजी ने दिया है। मैंने दीक्षा जो ली है।' कबूतर ने पूछा, 'क्या मैं भी आपके साथ चल सकता हूं?' बिल्ली ने कहा, 'जरूर चलो। तीरथ करने से पुण्य मिलता है।'

अब कबूतर ने हौले से पूछ लिया, 'लेकिन मौसी, आप

मुझे मार कर खा तो नहीं जाओगी न?' बिल्ली बोली, 'राम-राम-राम। भला मैं तुम्हें कैसे मार सकती हूं। मैं तो संन्यासिन हूं। वरना गले में यह कंठा क्यों डालती? तीरथ के लिए क्यों निकलती?' कबूतर को तसल्ली हो गई। वह बिल्ली के साथ चल दिया। रास्ते में उन्हें एक चूहा मिला। उसने पूछा, 'बिल्ली मौसी...बिल्ली मौसी, कहां चली?' बिल्ली बोली, 'तीरथ करने।' चूहे ने पूछा, 'गले में यह क्या है?' बिल्ली ने कहा, 'कंठा।' चूहे ने फिर पूछा, 'क्या मैं आपके साथ चल सकता हूं।' बिल्ली बोली, 'बेशक चलो। तीरथ करोगे तो तुम्हें भी पुण्य मिलेगा।' अब चूहे ने हौले से पूछा, 'लेकिन मौसी, आप हमें मार कर खा तो नहीं जाओगे न?' बिल्ली तुरंत बोली, 'राम-राम-राम। भला अब मैं किसी की हत्या कैसे कर सकती हूं? मैं तो अब शाकाहारी हूं। सिर्फ घास-फूस खाती हूं और प्रभु के गुण गाती हूं।' यह सुन चूहा भी बिल्ली के साथ चल दिया।

आगे बढ़ने पर रास्ते में उन्हें एक मोर मिला। उसने पूछा, 'बिल्ली मौसी... बिल्ली मौसी, कहां चली?' बिल्ली बोली, 'तीरथ करने।' मोर ने पूछा, 'गले में यह क्या है?' बिल्ली ने कहा, 'कंठा।' मोर ने पूछा, 'क्या मैं भी आपके साथ चल सकता हूं?' बिल्ली ने कहा, 'नेकी और पूछ-पूछ! तीरथ करने से तुम्हें भी पुण्य में हिस्सेदार बनोगे।' अब मोर ने भी धीरे-से अपनी शंका जताई, 'लेकिन मौसी, आप हमें मार कर खा तो नहीं जाओगे?' बिल्ली बोली, 'राम-राम-राम। भला मैं अब किसी के प्राण कैसे ले सकती हूं? मैं तो सिर्फ राम-नाम जपती हूं और तीरथ-तीरथ घूमती हूं।'

मोर भी बिल्ली के साथ चल दिया। चलते-चलते सब एक मंदिर के पास पहुंचे।

शाम ढल चुकी थी, इसलिए सब मंदिर में ही ठहर गए। कबूतर, मोर और चूहा तो रास्ते में ही दाना चुगते-खाते आए थे, लेकिन बिल्ली भूखी रही थी, क्योंकि उसने संन्यासिनी का चोला पहन रखा था। सबके सामने वह मांस-मछली कैसे खाती? वह तो मौके की तलाश में थी ताकि सबका कलेवा कर सके। उसने पहली चाल चली। उसने अपने साथियों से कहा, 'तुम सब मंदिर में सो जाओ। मैं बाहर सोऊंगी और पहरा दूंगी।' उसने सोचा था कि जब सब सो जाएंगे तो वह बारी-बारी से उनको खा जाएगी।

आधी रात हो चुकी थी। सभी घोड़े बेच कर सो रहे होंगे, सोचती हुई जब वह दबे पांव अंदर आई तो क्या देखा? सब जाग रहे थे। सबके मन में थोड़ा डर पहले से ही था। अब बिल्ली क्या करती? उसने चाल बदली और कड़क कर कबूतर से कहा, 'तुम दीदे किसे दिखा रहे हो?' कबूतर घबरा कर बोला, 'किसी को नहीं, बिल्ली मौसी! ये दीदे तो यो ही खुले हैं।' फिर बिल्ली ने कड़क कर मोर को डांटा, 'तुमने सिर पर यह कलगी किस लिए लगाई है?' मोर भी घबरा कर बोला, 'मैंने नहीं लगाई बिल्ली मौसी। यह तो अपने आप ही निकल आई है।' अब बारी चूहे की थी। बिल्ली गरजी, 'तुम किसे देख कर मूछों पर ताव दे रहो हो?' सीना चौड़ा करके चूहा गरजा, 'सौ चूहे मार कर बनी ढोंगी सन्यासिन को देख मैं ठेंगा भी दिखा रहा हूं।'

यह सुन कर बिल्ली आग बबूला हो उठी। जैसे ही वह चूहे को मारने के लिए लपकी कि चूहा बिल में घुस गया, कबूतर उड़ कर छत पर जा बैठा और मोर बाहर भाग गया। बिल्ली मौसी मुंह बाए देखती ही रह गई।

भेड़की आंटी

एक बकरी थी। लोग उसे भेड़की कहते थे। उसके सात बच्चे थे। एक रोज बकरी को अपना घर बनाने की इच्छा हुई। वह रास्ते में जा कर बैठ गई। अब उसे इंतजार था माल-सामान से लदी गाड़ियों का। थोड़ी देर बाद गुड़ से लदी हुई एक गाड़ी आई। बकरी रास्ते के बीचो-बीच बैठ गई। उसे देख कर गाड़ी वाले ने कहा, 'भेड़की भेड़की, रास्ता छोड़।' वह भड़क कर बोली, 'भेड़की तेरी मां, भेड़का तेरा बाप। मुझे भेड़की आंटी कह कर पुकारेगा और गाड़ी यहीं खाली करेगा, तब मैं यहां से हटूंगी।'

गाड़ी वाले ने बकरी को भेड़की आंटी कह कर पुकारा और गुड़ की भेलियों से भरी गाड़ी वहीं खाली कर दी। तब बकरी ने रास्ता छोड़ा। खाली गाड़ी आगे बढ़ गई। वह गुड़ की भेलियां सुरक्षित स्थान पर छोड़ आई। घंटे-भर बाद वह फिर से रास्ते पर बैठी थी। उसे इंतजार था, माल-सामान से भरी गाड़ियों का। तभी गन्नों से लदी एक गाड़ी आ पहुंची। बकरी को रास्ते में बैठी देख गाड़ी वाले ने कहा, 'भेड़की भेड़की, रास्ता छोड़।' वह भड़क कर बोली, 'भेड़की तेरी मां और भेड़का तेरा बाप। मुझे भेड़की आंटी कह कर पुकारेगा और गाड़ी यहीं खाली करेगा, तब मैं यहां से हटूंगी।'

गाड़ी वाले ने बकरी को भेड़की आंटी कह कर नमस्कार किया और गन्नों से भरी अपनी गाड़ी वहीं खाली कर दी। तब बकरी ने
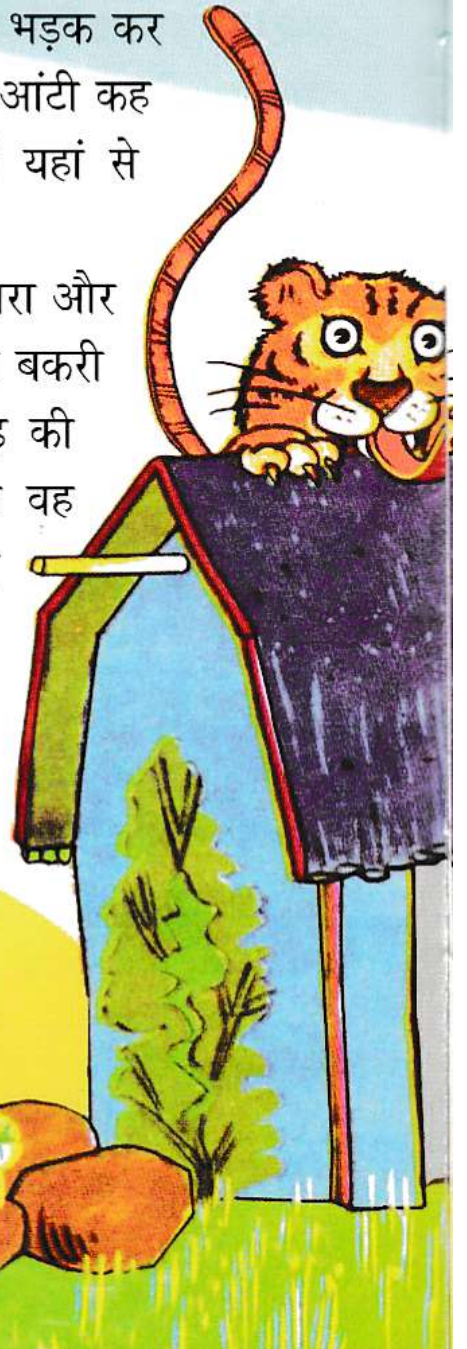
रास्ता छोड़ा। खाली गाड़ी आगे बढ़ गई। बकरी गन्नों को भी सुरक्षित स्थान पर छोड़ आई। घंटे-भर बाद वह फिर से सड़क पर बैठी थी। उसे इंतजार था, माल-सामान से भरी गाड़ियों का। तभी ककड़ियों से लदी-फदी एक गाड़ी वहां आ पहुंची। बकरी को बीच रास्ते में बैठी देख गाड़ी वाले ने कहा, 'भेड़की भेड़की, रास्ता छोड़।' बकरी भड़क कर बोली, 'भेड़की तेरी मां और भेड़का तेरा बाप। मुझे भेड़की आंटी कह कर पुकारेगा और गाड़ी यहीं खाली करेगा, तब मैं यहां से हटूंगी।' गाड़ी वाले ने उसे भेड़की आंटी कह कर दंडवत किया और ककड़ी से भरी गाड़ी वहीं खाली कर दी, तब बकरी ने रास्ता दिया। खाली गाड़ी आगे बढ़ गई। बकरी ककड़ियों के बोरों को भी सुरक्षित स्थान पर ले आई। अब सारा सामान मौजूद था। देखते ही देखते घर तैयार हो गया। बच्चे खुश हो गए। बकरी पानी भरने चली, तो उसने बच्चों से कहा :

गुड़ से बनाईं दीवारें, गन्नों से बनाई छत
छत पर बिछी ककड़ियां, अब काहे का डर

'जब मैं यह गीत गाऊं तभी तुम किवाड़ खोलना।' बच्चों को समझा कर बकरी चलते-चलते आंगन में खिले गुलाब, चंपा, चमेली के फूलों से विनती भी करती गई कि वे बच्चों का खयाल रखें। लेकिन नए घर के पीछे छिपे एक बाघ ने यह बातें सुन लीं। जब बकरी नजरों से दूर हो गई तो वह आंगन में आया और गला खंखार कर बोला :

गुड़ से बनाईं दीवारें, गन्नों से बनाई छत
छत पर बिछी ककड़ियां, अब काहे का डर

तभी आंगन में डोल रहे गुलाब ने चिल्ला कर कहा, 'बच्चो, किवाड़ मत खोलना। यह तुम्हारी मां नहीं, आदमखोर बाघ है।' बाघ को बहुत गुस्सा आया। उसने तुरंत गुलाब के पौधे को उखाड़ कर तालाब में फेंक दिया। फिर

निश्चिंत हो कर दोबारा ललकारा :

गुड़ से बनाईं दीवारें, गन्नों से बनाई छत
छत पर बिछी ककड़ियां, अब काहे का डर

तभी चंपा के फूल एक सुर में बोल उठे, 'बच्चो, किवाड़ मत खोलना। यह तुम्हारी मां नहीं, यह तो आदमखोर बाघ है।' यह सुन कर बाघ को बहुत गुस्सा आया। तुरंत उसने चंपा के पौधे को उखाड़ कर गड्ढ़े में फेंका और उस पर माटी डाल दी। अब उसने निश्चिंत हो कर फिर से गाना शुरू किया :

गुड़ से बनाईं दीवारें, गन्नों से बनाई छत
छत पर बिछी ककड़ियां, अब काहे का डर

तभी चमेली का पौधा चिल्ला उठा, 'बच्चो, किवाड़ मत खोलना। बाहर तुम्हारी मां नहीं, आदमखोर बाघ खड़ा है।' यह सुन कर बाघ आगबबूला हो उठा। उसने तुरंत चमेली के पौधे को उखाड़ कर पत्ता-पत्ता और फूल-फूल अलग कर दिया। अब उसने फिर से धुन छेड़ी :

गुड़ से बनाईं दीवारें, गन्नों से बनाई छत
छत पर बिछी ककड़ियां, अब काहे का डर

बच्चों ने जैसे ही किवाड़ खोला कि बाघ उन पर टूट पड़ा। बच्चे 'मां-मां' पुकारने लगे। लेकिन घर में कोई मौजूद हो, तब न
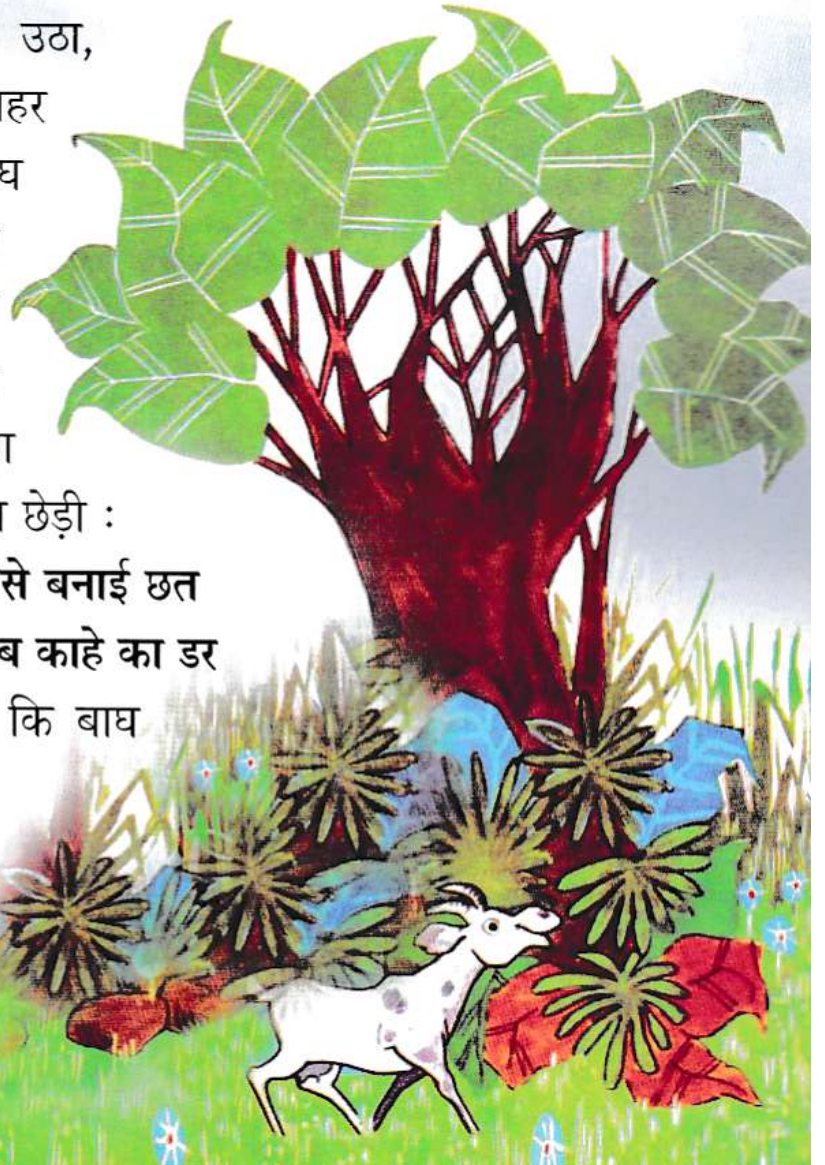
दे जवाब? बाघ बारी-बारी से सबको खा गया, केवल छुटके को छोड़ कर क्योंकि वह किवाड़ के पीछे छिपा था। बाघ खा-पी कर वहीं सो गया, तब छुटका किवाड़ के पीछे से निकल कर सीधा अपनी मां के पास पहुंचा और उसे सारा किस्सा सुनाया। बकरी का माथा घूम गया। वह तुरंत घर लौटी और किवाड़ के सामने खड़ी हो कर उसने शाप दिए :

चलते-चलते टूटे टांग, खाते-खाते फूटे पेट
गीदड़ हो या शेरे बबर, पलभर में ही टूटे कहर

तभी चमत्कार हुआ। बाघ का पेट सचमुच फूट गया और सारे बच्चे बाहर आ कर मां से लिपट गए।

पक-पक पकौड़ा

एक था ब्राह्मण और एक थी उसकी घरवाली। उनके घर सात लड़कियां थी। ब्राह्मण बहुत ही गरीब था। भिक्षा के लिए बेचारा रोज सात गांवों का फेरा लगाता, तब कहीं मुश्किल से वह गुजर-बसर कर पाता। एक रोज ब्राह्मण को पकौड़े खाने की इच्छा हुई। घरवाली बोली, 'लेकिन घर में इतना भी बेसन नहीं है कि सबके हिस्से में एक-एक पकौड़ा आ सके।' ब्राह्मण ने आह भरी, 'हाय रे किस्मत।' घरवाली को उस पर तरस

आ गया। वह बोली, 'ब्यालू करके लड़कियों को सो जाने दो। मैं आपको थोड़े पकौड़े बना दूंगी। खा कर पानी पी लेना। पेट भर जाएगा।'

लड़कियां सो गईं तो घरवाली ने चुपके से उठ कर चूल्हा सुलगाया। फिर चूल्हे पर कड़ाही रखी। उसमें थोड़ा तेल डाला। फिर बेसन सान कर पकौड़े बनाने बैठी। जैसे ही पहला पकौड़ा कड़ाही में डाला कि छनाका हुआ। फिर पकौड़ा तलने लगा तो तेल से पक-पक की आवाज उठने लगी। उसे सुन कर एक लड़की जाग उठी। वह तुरंत बोली, 'मां, मुझे पक-पक पकौड़ा दे।' मां बमकी, 'यह एक पकौड़ा खा और पानी पी कर सो जा।' पहली लड़की ने पहला पकौड़ा खाया और पानी पी कर सो गई। अब मां ने दूसरा पकौड़ा कड़ाही में डाला। दूसरी बार छनाका हुआ। फिर पकौड़ा तलने लगा तो तेल से पक-पक की आवाज उठने लगी। उसे सुन कर दूसरी लड़की जाग उठी और बोली, 'मां, मुझे पक-पक पकौड़ा दे। मां बमकी, 'ले खा कर सो जा।' दूसरी लड़की ने भी एक पकौड़ा खाया और पानी पी कर सो
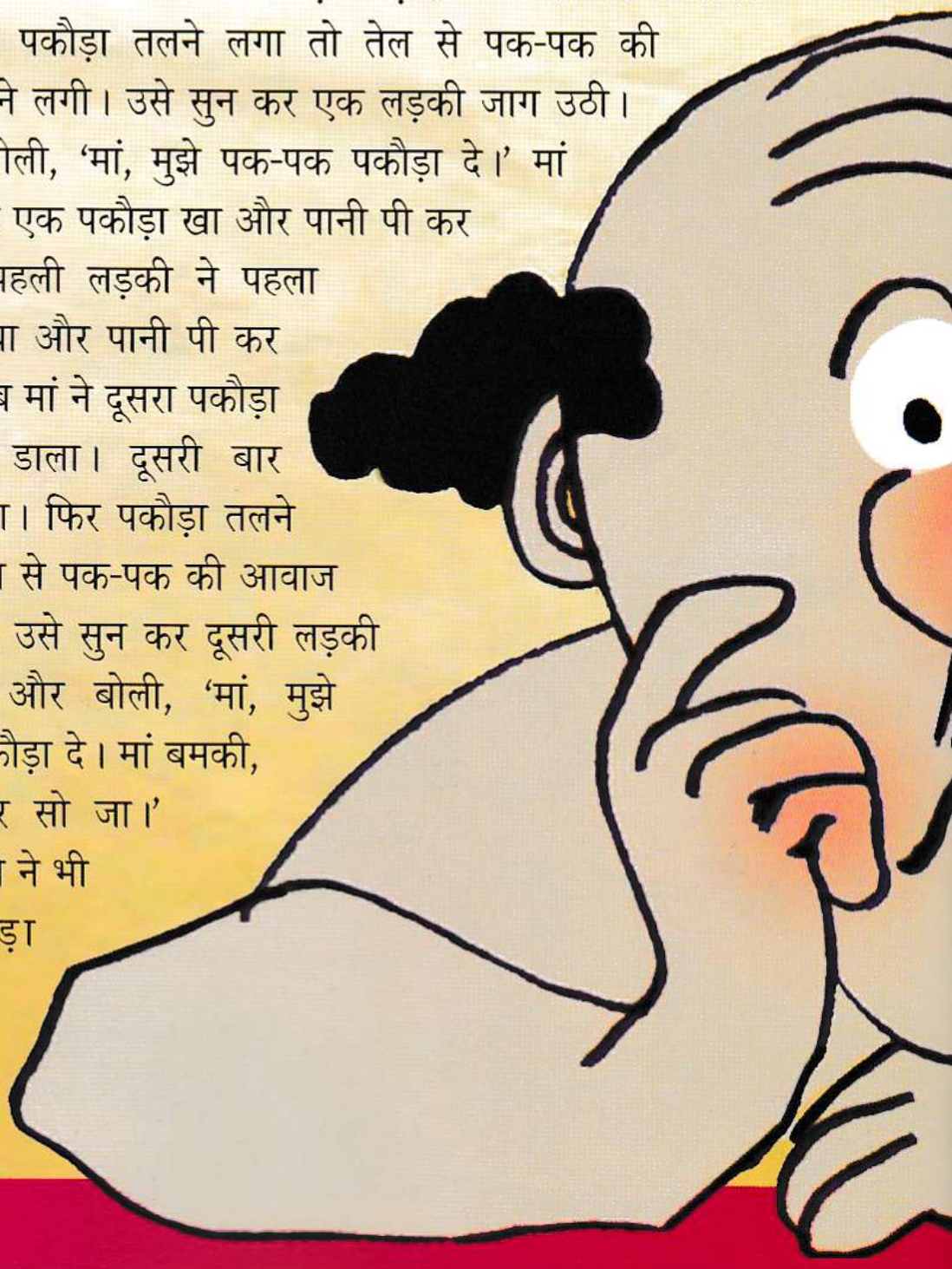
गई। घरवाली ने ब्राह्मण की ओर दया से देखा। वह बोला, 'आखिर तो ये सब हमारी ही संतान है न।' अब घरवाली ने कड़ाही में तीसरा पकौड़ा डाला। तुरंत छनाका हुआ और पक-पक की आवाज उठने लगी। उसे सुन कर तीसरी लड़की जाग उठी। बोली, 'मां, मुझे पक-पक पकौड़ा दे।' मां बमकी, 'अरी, तुझे भी इसी समय जागना था। ले यह पकौड़ा खा और चुपचाप सो जा। खयाल रहे, कहीं तेरी कोई और बहन न जागने पाए।'

तीन बेटियां तीन पकौड़े खा चुकी थीं। अब चार पकौड़ों का बेसन बचा था। घरवाली ने चौथा पकौड़ा कड़ाही में डाला। तुरंत छनाका हुआ और पक-पक की आवाज उठने लगी। उसे सुन कर चौथी लड़की भी जागी और मां ने उसे भी एक पकौड़ा थमा कर सुला दिया। फिर पांचवीं जागी, तो उसे पांचवां पकौड़ा देना पड़ा। उसके बाद छठी जागी, तो उसे छठा पकौड़ा देना पड़ा। अंत में सातवां पकौड़ा सातवीं लड़की ने खाया। बेसन खत्म हो गया। ब्राह्मण ने पकौड़े नहीं खाए। वह सिर्फ पानी पी कर सो गया।

राज की बात

एक थी लोमड़ी। उसमें एक बुरी आदत थी। वह रोज तड़के आ कर एक किसान के हल को गंदा कर जाती। किसान को रोज धोना पड़ता। उसने मन-ही-मन तय किया, 'अब इस लोमड़ी को सबक सिखाना पड़ेगा। ऐसा सबक कि नानी याद आ जाए।'

किसान ने हल पर गौंद चुपड़ दिया। उस रोज लोमड़ी जैसे ही हल को गंदा करने के लिए बैठी कि वह चिपक गई। छूटने के लिए उसने एड़ी-चोटी का जोर लगा दिया, लेकिन उसे निराशा ही मिली।

सवेरा होने पर किसान आया। लोमड़ी को चिपकी देख वह दांत पीस कर बोला, 'हल को जो रोजाना गंदा क्यों करती थी?' फिर उसने लोमड़ी की जम कर धुनाई की। यही नहीं उसे हल में जोत
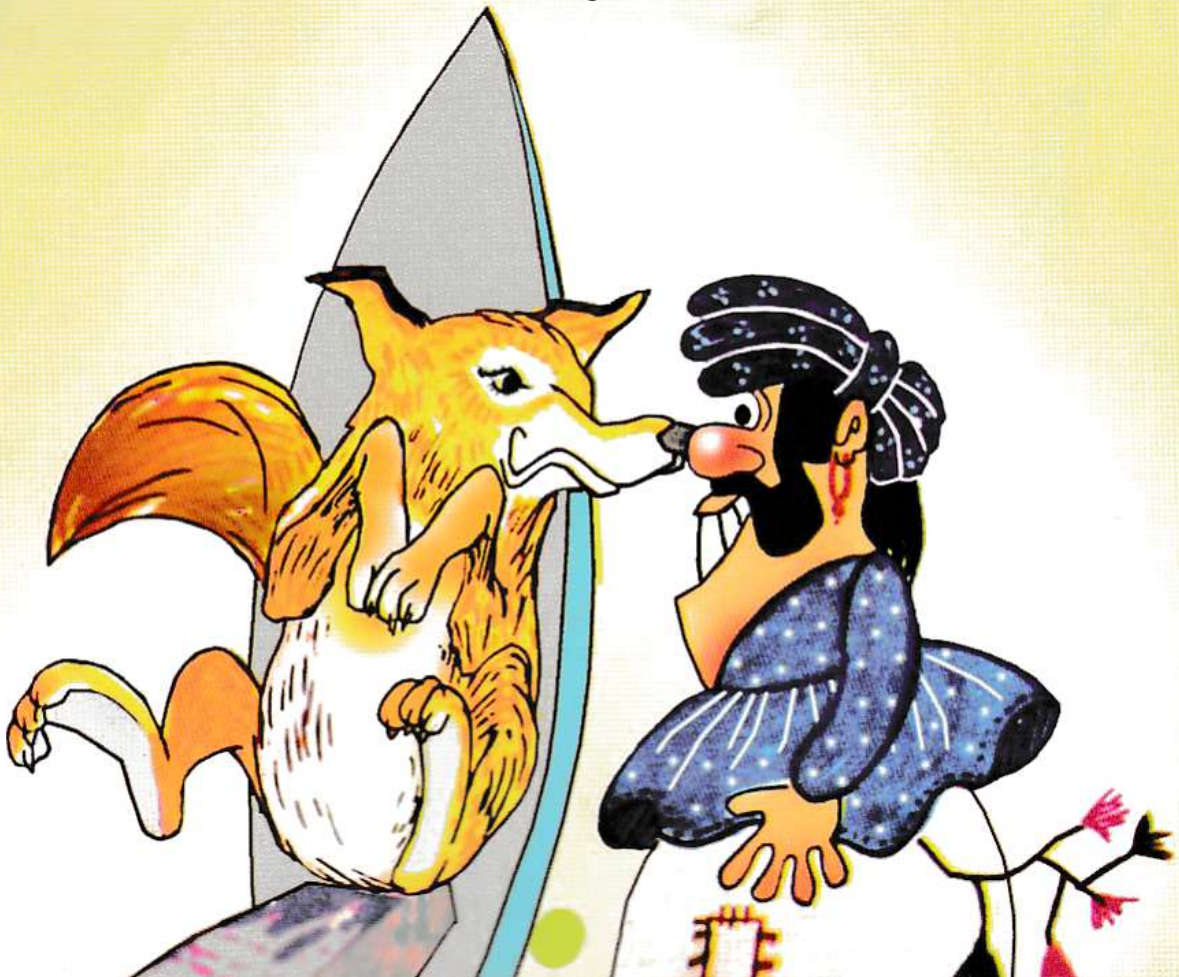
कर सारा दिन खेत पर चलाया। शाम को जब लोमड़ी को छोड़ा गया, तो उसकी गरदन सूजी हुई थी। कान से लहू बह रहा था। वह ठोकरें खाती हुई गांव पहुंची और घी मांगने लगी। घर-घर जा कर वह कहती, 'भैया, मेरी गरदन सूज गई है। मुझे थोड़ा घी दे दो। उसे मलने से सूजन ठीक हो जाएगी।' लोमड़ी ठहरी धूर्त। उसकी बात पर कौन भरोसा करता? फिर भी एक बुढ़िया को उस पर तरस आ गया। उसने लोमड़ी को थोड़ा घी दिया। उसमें से लोमड़ी ने आधा घी गरदन पर लगाया और बाकी आधा घी कुल्हड़ में भर लिया। अब वह गांव में घी बेचने निकली, 'ले लो जी...घी ले लो।' ऐसे आवाज लगाती हुई वह गली-मुहल्लों में घूमने लगी। एक ग्वालन के पास घी खरीदने के लिए पैसे नहीं थे, लेकिन उसके पास एक भैंस जरूर थी। उसने कहा, 'लोमड़ी बहन, मेरे पास नकद-नारायण तो है नहीं। चाहो तो यह बीमार भैंस ले लो और मुझे घी दे दो।' लोमड़ी ने वैसा ही किया। कुल्हड़ दिया और भैंस ले ली। अब वह जंगल से रोज घास काट कर लाती और भैंस को खिलाती। थोड़े दिनों में भैंस तगड़ी हो गई। लोमड़ी उसके नीचे दोहनी रख दुहने बैठी :

ताजा-ताजा हरी-हरी खा ले घास
दूध से भर जाए दोहनी है ये ही आस

भैंस घास खा जाती और दोहनी दूध से भर जाती। लोमड़ी रोज सेर-भर दूध पी जाती। वह दिन-ब-दिन सुंदर होने लगी। वह इतनी गोरी हो गई कि मानो चांद का टुकड़ा हो। एक रोज उसकी सहेलियों ने उसे घेर लिया। फिर उनमें से एक ने पूछा, 'बहना...बहना, आप इतनी गोरी कैसे बनीं, यह राज हमें भी बताओ न!' लोमड़ी वोली, 'मैं तो धूल खाती हूं और गोरी होती हूं।' उसी रोज से सारी लोमड़ियों ने धूल फांकनी शुरू कर दी। सुबह नाश्ते में धूल। दोपहर भोजन में धूल। शाम को ब्यालू में धूल। नतीजा यह निकला कि वे सब बीमार

हो गईं। सब मिल कर दो रोज बाद फिर से लोमड़ी के घर पहुंचीं और बोली, 'बहना...बहना, हमें सच-सच बताओ न, गोरी-चिट्टी कैसे बना जाता है? धूल खा-खा कर तो हम सब खाट से लग गईं।' लोमड़ी बोली, 'मेरी प्यारी-प्यारी सहेलियो, मैं तो राख खाती हूं और दिन-ब-दिन मोटी होती जाती हूं।' उसी रोज से सबने राख खाना शुरू कर दी। राख का कलेवा, राख का भोजन, राख का ब्यालू। नतीजा यह निकला कि वे सब फिर से बीमार हो गईं। अब लोमड़ियों की पंचायत बैठी। मुखिया ने डांटते हुए लोमड़ी से कहा, 'तुम बिरादरी वालों को सही राज नहीं बताओगी तो पंच मिल कर तुम्हारी खटिया यहीं खड़ी कर देंगे।'

लोमड़ी डर गई। वह तुरंत बोली, 'पंच तो मेरे माई-बाप हैं। अब मैं झूठ नहीं बोल सकती। मेरे घर जो भैंस बंधी है, उसका दूध पी कर मैं रूप की रानी बनी हूं।' दूसरे रोज से सारी लोमड़ियां भैंस का दूध पीने लगीं और महीने भर में चांद-जैसी गोरी भी हो गईं।

लाल बुझक्कड़

बात एक देहात की है। उसमें रहने वाले सभी मूरख थे। न कुछ जानते थे, न कुछ समझते थे। बारिश के दिनों में एक रोज चौपाल पर एक मेंढक आ पहुंचा। किसी ने मेंढक को कभी नहीं देखा था। टी.वी. पर भी नहीं, क्योंकि उस गांव में एक भी टी.वी. नहीं था।

गांव के सारे लोग चौपाल पर इकट्ठा हो गए। घुटनों पर हाथ टेक टकटकी बांध मेंढक को देखते रहे। पर कोई नहीं समझ पाया कि वह कौन-सा प्राणी है? सब एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। तब काठ के एक उल्लू ने मुंह खोला, 'मुझे तो यह हिरन लगता है।' तुरंत दूसरा बोला, 'अकल की दुम, यह तो बगुला है बगुला।' तीसरे ने कहा, 'बिना सोचे-समझे क्यों टांय-टांय कर रहे हो? यह तो खरगोश है खरगोश।' इसी बीच चौथा बोल उठा, 'कुछ मेरी भी तो सुनो। यह पहेली
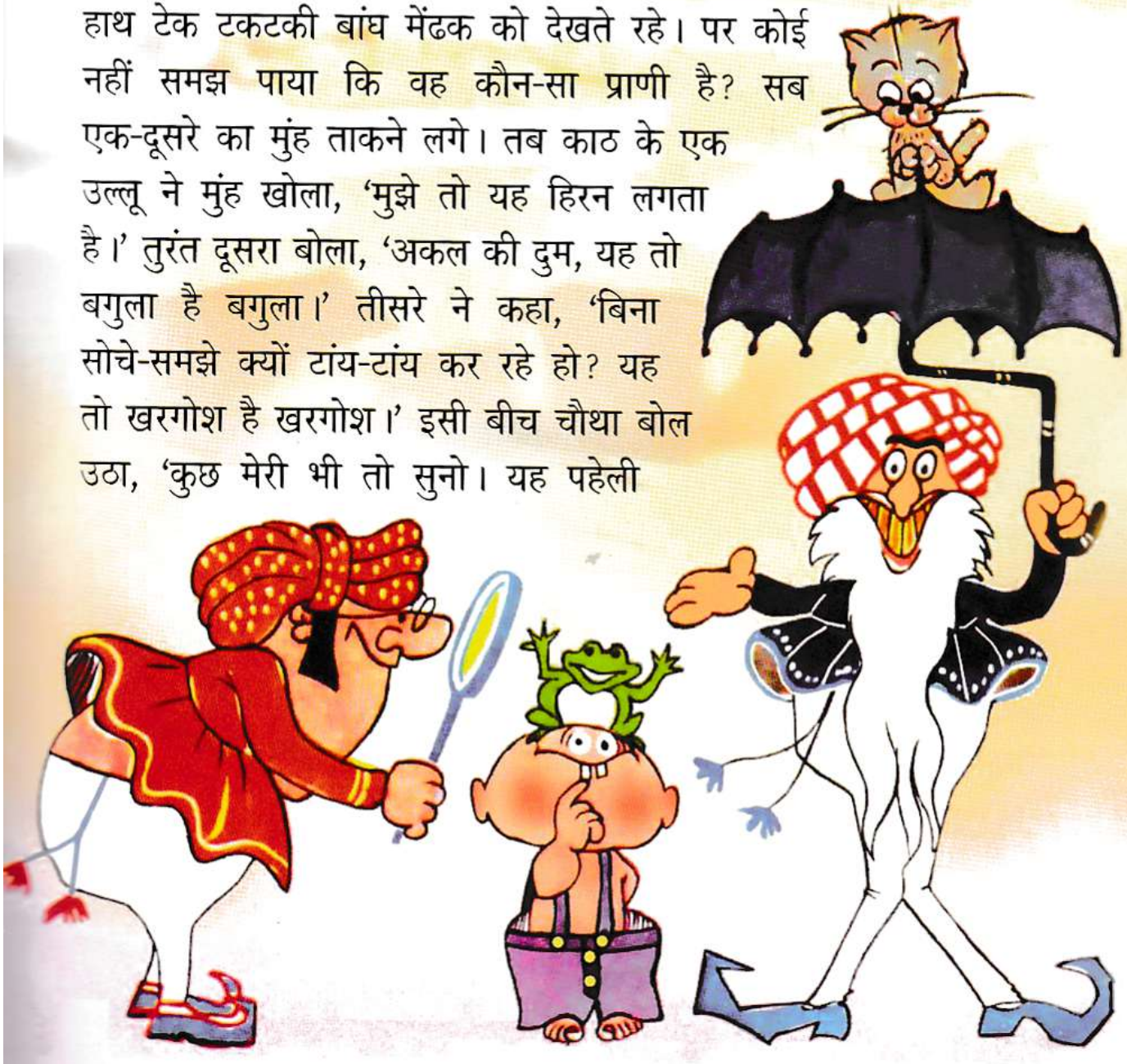
बुझाना हमारे बस की बात नहीं है। कोई जा कर लालजी भाई को बुला ला। वे दूध का दूध और पानी का पानी कर सही-सही बता देंगे। बुजुर्ग आदमी है। उन्होंने दुनिया देखी है। भला इन मसलों का हल हम क्या जानें?' थोड़ी देर बाद लालजी भाई लट्ठ भांजते हुए पधारे। वे डपटते हुए बोले, 'कैसे अज्ञानी हो तुम! अब तो समझो। क्या मैं कयामत तक जिंदा रहूंगा कि आए-दिन तुम लोगों की समस्याएं सुलझाता रहूं।' फिर वे मेंढक के पास आए। आंखों पर ऐनक चढ़ा कर गौर से देखा। फिर ऐनक उतारते हुए कहने लगे, 'इतनी-सी बात के लिए तुम लोगों ने मुझे कष्ट दिया? अरे बेवकूफो, चुटकी-भर दाने डालो। चुगने लगे तो समझो चिड़िया है, वरना चूहा तो है ही।'

उसी देहात के परकोटे में चार दरवाजे थे। उन चार में से एक छोटा था। एक रोज रात में एक हाथी उसी दरवाजे में से घुसने लगा तो फंस गया—न अंदर घुस सकता था, न बाहर निकल सकता था। भोर होने पर लोगों ने देखा कि दरवाजे में अंधेरा

है। सब हैरान रहा गए—'अरे, यह क्या हो गया? सवेरा हो जाने पर भी दरवाजे में इतना अंधेरा कैसे?' लोग एक-दूसरे से कहने लगे—यह रात है या दिन। या दिन में रात है? किसी ने बताया, 'यह रात नहीं, काजल का ढेर है।' दूसरा बोला, 'अरे, यह तो बरसाती बादल है।' तीसरे ने कहा, 'बुलाओ लालजी भाई को। जो भी होगा, वह सही-सही बता देंगे।' थोड़ी देर बाद लालजी भाई लट्ठ भांजते हुए आ पहुंचे। आंखों पर ऐनक चढ़ा और नजरें गड़ा कर देख लेने के बाद उन्होंने कहा, 'उफ्...फिर आप लोग धोखा खा गए। दरअसल बात यह हुई है कि रात तो चली गई, लेकिन आज पहली बार अपने अंधेरे को साथ ले जाना भूल गई। भाइयो, यह रात का अंधेरा है।' अब उन्होंने हाथी की चमक रही आंखों पर नजरें टिका कर जोड़ा, 'ये जो दो दीपक-से जगमगा रहे हैं, ये सितारे हैं। समझे?' सब समझ गए। क्या? ढाक के तीन पात।

पोंगा पंडित

एक थे पंडितजी। काशी से ज्ञान प्राप्त कर आए थे। चार वेद और छह शास्त्रों के ज्ञाता थे। एक रोज वह पड़ोस के गांव में गीता पाठ करने गए। गांव वालों ने आपस में बातचीत की–हमें कैसे मालूम हो कि पंडितजी सचमुच ज्ञानी हैं? अंत में यह तय हुआ कि पंडितजी से एक सवाल पूछा जाए। यदि वह सही-सही जवाब दें तो गीता पाठ करें और जवाब न दे पाएं तो अपनी पोथी यहीं छोड़ कर लौट जाएं। पंडितजी तैयार थे। बोले, 'पूछो।' तब मुखिया ने सवाल उछाला, 'बुंदम-बुंदा मानी क्या?' पंडितजी सोच में पड़ गए। यही नहीं, अपनी पोथी का एक-एक पन्ना उलट
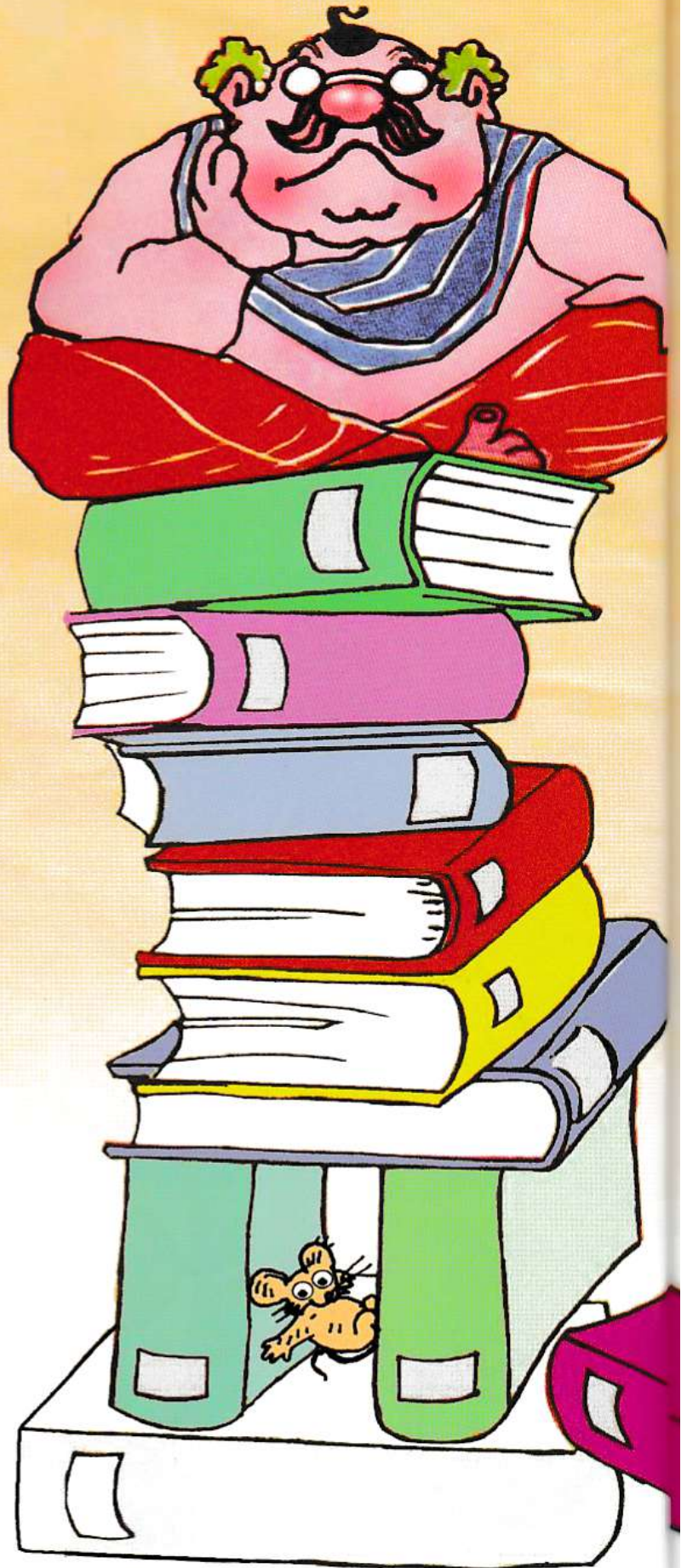
डाला, लेकिन कहीं भी 'बुंदम-बुंदा' का अर्थ नहीं मिला। वह सिर खुजलाने लगे। अब मुखिया ने मुस्करा कर कहा, 'पंडितजी, यह आपके बस की बात नहीं। आप जैसे पोंगा पंडित यहां कई आ चुके हैं। लेकिन आज तक हमारे सवाल का जवाब कोई नहीं दे पाया। अब आप अपनी पोथी छोड़िए और यहां से सिधारिए।' पंडितजी का चेहरा मरे हुए चूहे जैसा हो गया। वह मुंह लटकाए घर लौट आए। उनकी सूरत देख कर उनका भाई समझ गया। वह बोला, 'उस टेढ़ों के गांव में आप जैसे सीधों का काम नहीं। उन घसियारों को तो मैं ही ठीक करूंगा।' दूसरे रोज वह अपना हुलिया बदल कर पड़ोस के उस गांव में पहुंच गया। सिर पर लंबी चोटी, माथे पर लाल तिलक, गले में रुद्राक्ष की चार-चार मालाएं, बगल में एक बड़ा पोथा और एक हाथ में सुमिरनी। उसकी ठसक देख गांव वाले प्रभावित हुए। इसे कहते हैं असली पंडित। लेकिन परीक्षा तो इसकी भी लेनी पड़ेगी। वरना तसल्ली कैसे हो कि यह पट्ठा ज्ञानी-ध्यानी है या चलता पुर्जा।

इस नए पंडित को जलपान करवा कर मुखिया ने शुरुआत की, 'अभी दो रोज पहले ही एक पंडितजी अपनी पोथी यहां छोड़ सिधार गए और आप पोथी ले कर पधारे हैं। खैर, थोड़ी ही देर में आपकी औकात भी हमें पता चल जाएगी।' इस नकली पंडित ने तुरंत जवाब दिया, 'वह था पोंगा पंडित। मैं हूं असली पंडित। मेरी लंबी चोटी देखो। माथे पर का यह लाल तिलक देखो। फिर भी संतोष न हो तो संसार का कोई भी सवाल पूछ लो।' मुखिया तुरंत बोला, 'बुंदम-बुंदा माने क्या?' नकली पंडित सवाल सुन कर हंस दिया। फिर मुखिया को टोकते हुए बोला, 'पहले प्रश्न करना सीखें, फिर ज्ञानियों से सत्संग करें।'
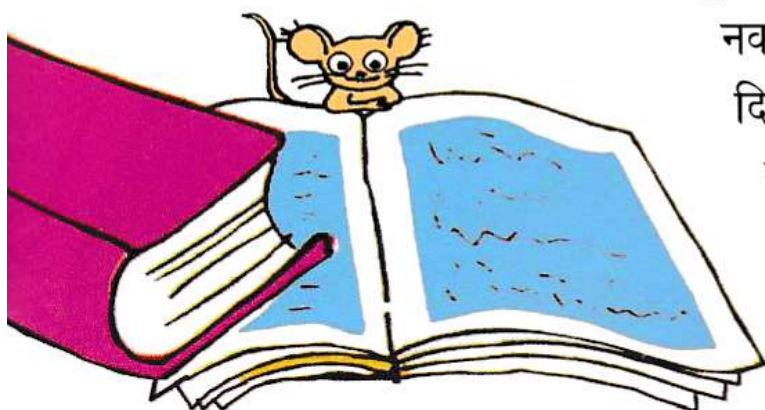
मुखिया के साथ सारे गांव वाले भी सकते में आ गए। उसने आगे बताया, 'मूल पहेली यों है' :

खेतम् खेता हलम् हला
बैलम् बैला जोतम् जोता
तब होती है बुंदम-बुंदा यानी बूंदाबांदी

सभी के मुंह से एक साथ 'वाह' निकल गई। यही हैं सच्चे पंडितजी। यही हैं सच्चे ज्ञानी-ध्यानी। इस नकली पंडित की सारे गांव वालों ने आवभगत की। घर-घर दावत दी गई और तगड़ी दक्षिणा भी। जब लौटने का समय आया तो उसने अपने भाई की पोथी भी मांग ली। दूसरे रोज भाई ने पोथी देखी तो वह खुश हो गया।
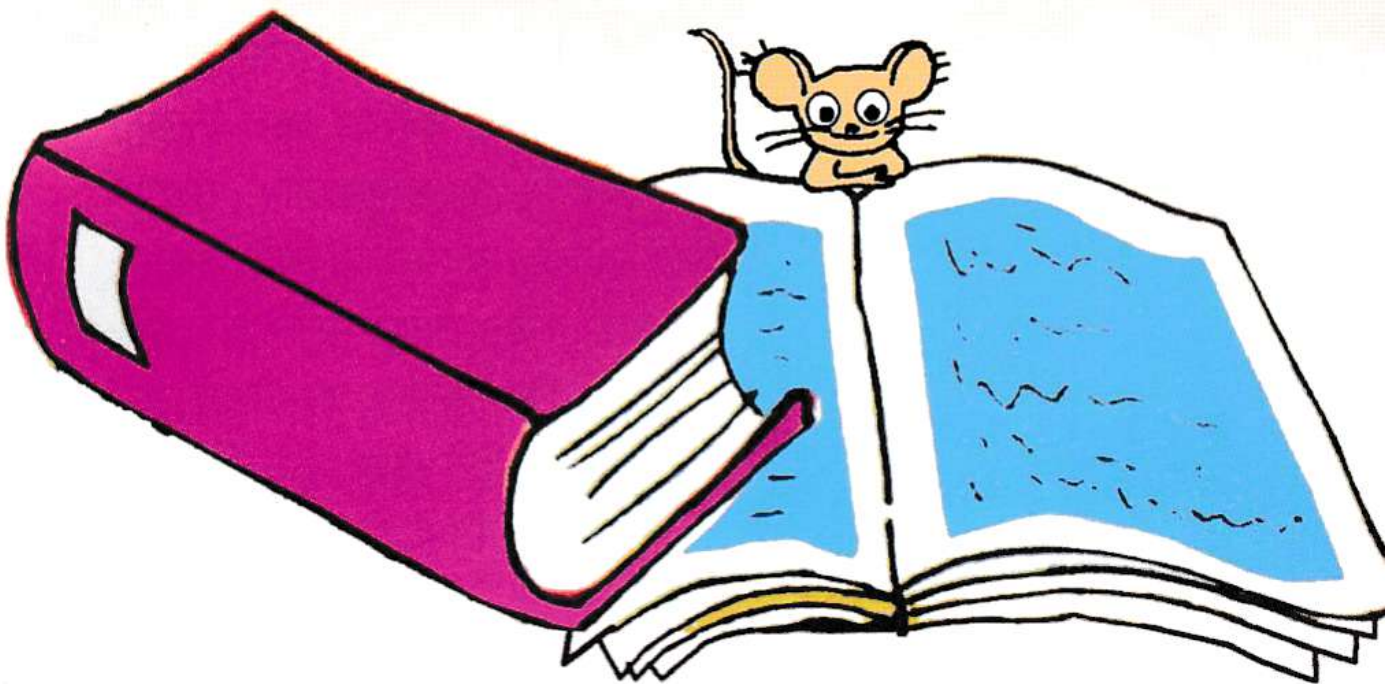
रानी बन गई दासी

एक था राजा। उसकी एक बेटी थी। अपनी बेटी यानी राजकुमारी का ब्याह उसने पड़ोस के एक राजा से तय किया। जब राजकुमारी डोली में बैठ ससुराल चली तो उसके साथ उसकी एक दासी भी थी। दोपहर हुई। डोली उठाने वाले कहार भोजन करने के लिए एक नदी के पास रुके। राजकुमारी का नियम था कि वह रोज स्नान करने के बाद ही भोजन करती थी। इसलिए वह अपनी दासी के साथ नदी में नहाने गई। इधर राजकुमारी अपने

कपड़े उतार कर नदी में स्नान करने लगी, उधर राजकुमारी के कपड़े पहन कर दासी डोली में जा बैठी। तुरंत खाना-पीना निपटा कर कहार डोली के साथ आगे बढ़ गए।

जब राजकुमारी स्नान करके नदी से बाहर निकली तो देखा कि वहां दासी नहीं है। दासी किनारे पर एक फटी-पुरानी साड़ी छोड़ गई थी। उसे पहन कर वह बेचारी आगे बढ़ी तो क्या देखती है कि वहां न डोली है और न कहार हैं।

रोती-बिलखती राजकुमारी गरम-गरम रास्ते नंगे पांव चल पड़ी और भूखी-प्यासी, हैरान-परेशान अपने ससुराल वाले गांव आ पहुंची। वहां उसने राजमहल में दासी की नौकरी ली। यही नहीं, अपनी सेवा से उसने राजा को प्रसन्न किया। एक रोज राजा दिल्ली जाने को निकला। सबने अपने-अपने लिए अलग-अलग चीजें मंगवाईं। इस दासी ने गुड्डा और गुड्डी की जोड़ी लाने को कहा। जब राजा दिल्ली से लौटा, तो दासी के लिए जापानी गुड्डा-गुड्डी की सुंदर जोड़ी ले आया। अब रोज रात होने पर दासी कमरे में जाकर गुड्डा-गुड्डी को अपने सामने बैठाती और उनको कहानी सुनाती, 'गुड्डे राजा, गुड़िया रानी सुनते हो?' गुड्डा-गुड्डी बोलते, 'जी-जी-जी।'

'मैं थी एक राजकुमारी।'

'जी-जी-जी।'

'मेरी डोली के साथ एक दासी चली।'

'जी-जी-जी।'

'रास्ते में एक नदी आई।'

'जी-जी-जी।'

'अपने जेवर-कपड़े दासी को सौंपे।'

'जी-जी-जी।'
'मैं नहाने गई।'
'जी-जी-जी।'
'फिर दासी बन गई रानी।'
'जी-जी-जी।'
'और असली रानी बन गई दासी।'
'जी-जी-जी।'

दासी रोजाना यह किस्सा गुड्डा-गुड्डी को सुनाती थी। एक रोज राजा दासी के कमरे के पास से गुजरा और उसने भी यह कहानी सुनी। वह सोच में पड़ गया, क्योंकि कहानी उसके मन को छू गई थी। उसके मन में सवाल उठे, 'क्या यह कहानी सच्ची होगी? यह कहानी झूठी है, तो क्या झूठी कहानी मन के तार झनझना सकती है?' राजा को अपने एक भी सवाल का उत्तर नहीं मिला तो उसने दासी को बुला कर उससे मतलब पूछा। दासी ने सारा किस्सा जस का तस कह सुनाया। अब राजा को पता चला कि असली रानी तो सामने है और जो रानी बन कर ऐश कर रही है, वह झूठी है। उसी पल राजा ने नकली रानी को गधे पर उलटी बैठा कर खदेड़ दिया और दासी को अपनी रानी बना कर वे सारे सुख दिए, जो सिर्फ एक महारानी ही भोग सकती है।

तोता-मैना

एक था राजा। उसने एक तोता पाला था। तोता हमेशा मीठी बोली बोलता और राजा को खुश करता। राजा ने उसके लिए सोने का एक सुंदर पिंजरा बनवाया। उसमें हीरों से जड़ी छोटी-छोटी कटोनियां भी रखीं।

तोते के पिंजरे के पास रोजाना एक मैना आ कर बैठती और मन मसोस कर रह जाती। फिर मन-ही-मन बुदबुदाती–काश, ऐसा शानदार पिंजरा मुझे भी नसीब होता!

एक बार तोते का पिंजरा भूल से खुला रह गया। तोता सैर करने आकाश में उड़ गया। मैना ने सोचा, यही मौका है सोने के पिंजरे में घुस कर मौज करने का। उसने तुरंत अंदर जा कर भीतर से दरवाजा बंद कर लिया। दूसरे रोज मुंह-अंधेरे राजा आया और रोज की भांति तोते को नया श्लोक सिखाने लगा। लेकिन पिंजरे में तो मैना थी। उसे तोते की तरह मधुर वाणी में बोलना नहीं आता था। राजा सोच में पड़ गया—यह तोते बोलता क्यों नहीं? नया सबक सीखता क्यों नहीं? मगर पिंजरे में तोता हो तब न बोले! राजा को आया क्रोध। उसने एक छड़ी ली और पिंजरे में घुस कर मारने लगा। आखिर मैना से बर्दाश्त नहीं हुआ।
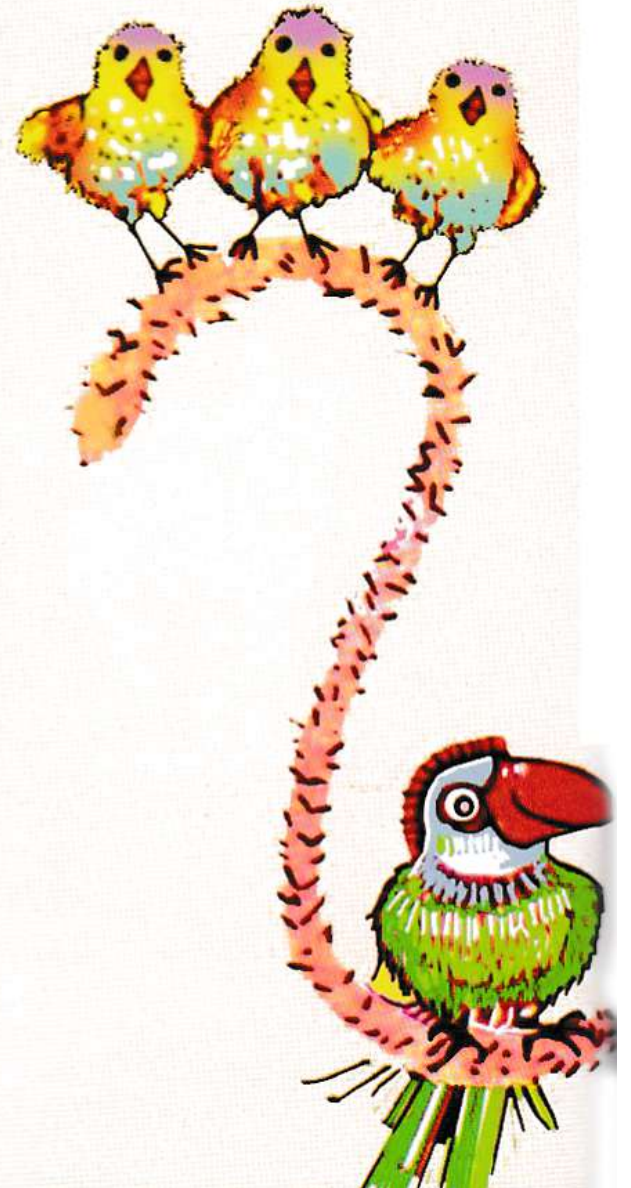
वह बोल पड़ी :

मत मारो तुम हमें छड़ी से राजा
हो जाएगा जख्म बदन पर ताजा
उड़ गया सुरीला तोता तो कब का
छोड़ के पीछे एक बेसुरा बाजा

अब राजा को समझ में आया कि पिंजरे में तोता नहीं, मैना है। उसने मैना को दो छड़ी और मारी। वह उड़ गई। थोड़ी देर बाद तोता लौटा और अपने खाली पिंजरे में आ कर बैठ गया।

शिक्षक भाई-बहनों से

लीजिए, ये है बाल-कथाएं। आप बच्चों को इन्हें सुनाइए। बच्चे इनको खुशी-खुशी और बार-बार सुनेंगे। आप इन्हें रसीले ढंग से कहिए, कहानी सुनाने के लहजे से कहिए। कहानी भी ऐसी चुनें, जो बच्चों की उम्र से मेल खाती हो। भैया मेरे, एक काम आपकभी न करना। ये कहानियां आप बच्चों को रटाना नहीं। बल्कि, पहले आप खुद अनुभव करें कि ये कहानियां जादू की छड़ी-सी हैं।

यदि आपको बच्चों के साथ प्यार का रिश्ता जोड़ना है तो उसकी नींव कहानी से डालें। यदि आपको बच्चों का प्यार पाना है तो कहानी भी एक जरिया है। पंडित बन कर कभी कहानी नहीं सुनाना। कील की तरह बोध ठोकने की कोशिश नहीं करना। कभी थोपना भी नहीं। यह तो बहती गंगा है। इसमें पहले आप डुबकी लगाएं, फिर बच्चों को भी नहलाएं।

गिजुभाई